ISBN – 978-81-958064-0-9

हमे भविष्य निर्माण के स्वप्न नही आते तब तक हमारी कला और साहित्य कमजोर रहेगा और उसमे सच्ची शक्ति नही आएगी।" मनुष्य मे एक सभावना हो जिसमे भविष्य के निर्माण की सपनो के अनुगूँज हो। यह सही हैकि मनुष्य अपने समय की वास्तविकता से टकराकर अपनी जिजीविषा को आगे बढाता है, परतु सिर्फ वास्तविकता से वह जिजीविषा पुष्टि नही हो सकती, इसके लिए वास्तविकता के साथ सभावना की भी जरूरत पडती है। मनुष्य की सार्थकता वास्तविकता के साथ सभावना को साथ लेकर चलने मे ही है। यही तो जीवन को सफलता की राह दिखाती है।

दिनाक: 01/06/2022

स्थान: बेगलूरु

डॉ.एम.अब्दुल रजाक

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

क्रिस्तु जयती महाविद्यालय (स्वायत्त)

के- नारायणपुरा, कोतनूर पोस्ट,

बेगलूरु, पिन-560077, दूरभाष-9493405942

अनुक्रमणिका

क्र.स.	आलेख का शीर्षक	पृ. स.
1.	कोरोना महामारी के सन्दर्भ मे साहित्य की भूमिका: वर्तमान और भविष्य की सभावनाएँ **-डॉ. अनु पाण्डेय**	01
2.	कोरोना महामारी के समय मे किसान जीवन **-डॉ. एस.सुधा मणि**	09
3.	कोरोना महामारी मे डॉक्टरो की भूमिका **-डॉ. गगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'**	16
4.	विश्व मे कोविड-19: महामारी का कहर **-प्रो. महमद नयाज पाषा**	28
5.	वैश्विक कोरोना प्रकोप के समय ऑनलाइन शिक्षा **-डॉ. रेवा प्रसाद**	35
6.	कोविड-19 का प्रकोप एव साहित्य की भूमिका **-डॉ. सुनीता राठौर**	42
7.	वैश्विक कोरोना प्रकोप: हिंदी कविता की पृष्ठभूमि **-डॉ. एम. अब्दुल रजाक**	48
8.	वैश्विक कोरोना प्रकोप के समय मे ऑनलाइन शिक्षा **-सी. बालकृष्ण**	57
9.	वैश्विक कोरोना प्रकोप के समय आर्थिक चुनौतियां **-एस. इरफान बाशा**	61

10. कोविड-19: भारतीय शिक्षा व्यवस्था की सम्भावना 67
-डॉ.विजय कुमार गुड्डुरु

11. वैश्विक कोरोना प्रकोप: किसानों की स्थिति, गति एवं चुनौतियाँ -डॉ. के. राघवेंद्र राव 72

12. कोरोना एक महामारी: संक्रमण और उपचार 79
-प्रो. विनोद बाबूराव मेघश्याम

13. कोरोना वायरस- एक-वैश्विक महामारी 85
- डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ

14. वैश्विक महामारी और शिक्षा के संदर्भ मे 93
-डॉ. बिरादार शिवाजी गणपतराव

15. कोरोना महामारी का प्रकोप: अर्थव्यवस्था 97
-डॉ.ज्योति मुगल

16. कोरोना महामारी के बाद की स्थिति, गति एवं चुनौतियाँ 106
-डॉ. सुरेश

17. कोरोना महामारी के समय: शिक्षा की स्थिति और गति 110
-डॉ. पी. विमला

18. कोरोना महामारी-अ-ऑनलाइन शिक्षा मे चुनौतियाँ 115
-डॉ० पुष्पा. के

19. कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव -डॉ.रतन कुमार 123

20. कोविड19: स्थिति और गति एवं चुनौतियां -डॉ.पी.कृष्णा 127

21. कोरोना प्रकोप: नई शिक्षा नीति -डॉ.टी. श्रीनिवासलु 133

22. कोरोना महामारी: सावधान रहने के उपाय -एम.शीलता 139

कोविड-19 से बचकर निकलनेवालों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए। कोविड-19 परीक्षा ज्यादा से ज्यादा होना चाहिए वैयक्तिक तौर से या सामाजिक रूप से, यह जरूरी है कि सामाजिक दूरी बनाए रखना चाहिए, इससे भी ज्यादा अपने आप को वैयक्तिक दूरी बनाए रखना यह बेहतर है। कहा जा रहा है साल के अंत तक रेमडिसिवर और को वैक्सीन की टीका सब को मिलेगी उम्मीद है। ऐसा होगा तो किसी भी वायरस की टीका को विकसित करने में लगा सबसे कम समय होगा।

अब हम देख रहे है इसका एक मात्र उपाय हमें यह दिखाई दे रहा है कि ऐसोलेशन ही बेहतर है। जीवन एक ऐसी पाठशाला है जो निरंतर एक-एक पाठ सिखाता रहता है आप चाहे या न चाहे हम लोगों को परीक्षा लेना ही पड़ेगा ऐसे अवसरों पर कोई दिल छोटा करना या स्थिति से डर कर भाग जाना नहीं इसके बदले डटकर सामना करना। हमारा दिमाग भी एक अजीब सी चीज है जो निरंतर विचारों का तूफान खड़ा करता रहता है उन विचारों की आँधी को सकारात्मक रूप से लेना पड़ता है। सामान्य रूप से क्वारंटाइन का समय जो चौदह दिनों का बताया जा रहा है उस के हिसाब से अपने मन पसंद चीजों को अभ्यास को जारी रखना चाहिए जिससे अपनी दिनचर्या अच्छी बनेगी। ऐसा करने से अनावश्यक चिंता दूर होगी और इन्सान सुकून प्राप्त कर सकता है। वैसे तो आज के समय में फोन के जरिए से दोस्तों और सबंधियों से संपर्क बनाए रखना भी जरूरी है।

प्रो.महमद नयाज़ पाषा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
क्रिस्तु जयंति कॉलेज(स्वायत्त)
बेंगलूरु -560077, दूरभाष-9632783783
nayazpasha@kristujayanti.com

5. वैश्विक कोरोना प्रकोप के समय ऑनलाइन शिक्षा

डॉ . रेवा प्रसाद

प्रस्तावना:

शिक्षा लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और शिक्षित व्यक्ति अच्छी शिक्षा के बलबूते पर अपने करियर का निर्माण करता है। वर्तमान जीवन में आजकल ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जहाँ शिक्षक छात्र के साथ दुनिया के किसी भी कोने से इन्टरनेट के माध्यम से जुड़ सकता है। ऑनलाइन शिक्षा एक अलग किस्म की प्रणाली है जहाँ शिक्षक विभिन्न प्रकार के टूल्स का उपयोग कर शिक्षा को आसन बना देता है। ऑनलाइन शिक्षा को सरल शब्दों में इन्टरनेट पर आधारित शिक्षा व्यवस्था भी कहा जा सकता है। कोविड महामारी के समय में सरकार ने समस्त स्कूलों एवं शिक्षा संस्थानों को अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया तो भारत समेत कई देशों ने ऑनलाइन शिक्षा को महत्व दिया। इस माध्यम से शिक्षक इन्टरनेट के जरिये अपने छात्र से संवाद स्थापित कर सकता है। देश में ऑनलाइन शिक्षा पहले भी उपलब्ध थी परन्तु लॉकडाउन के पश्चात् इसका प्रचलन तेजी से बढ़ा है।

ऑनलाइन शिक्षा क्या है? ऑनलाइन शिक्षा को सरल भाषा में उस प्रणाली के रूप में समझ सकते है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे ही इन्टरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट फोन और टैबलेट के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इस नई शिक्षा प्रणाली ने न केवल समय और दूरी को बिलकुल समाप्त कर दिया है अपितु विद्यार्थी अपने समय के अनुसार रिकार्डेड लेक्चर की मदद से पढ़ाई कर सकते है।

इस महामारी के दौर में सरकार, संस्थानों और शिक्षकों ने डिजिटल शिक्षा को लोकप्रिय बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कई विद्यालयों ने नियमित रूप से अपने शिक्षकों की शिक्षण गतिविधियों को बच्चों तक वर्चुअल कक्षा के रूप में पहुँचाना शुरू किया है। बच्चों को व्हाट्सएप, गूगल क्लासरूम, मेल आदि के जरिये भी स्टडी मटेरियल विडिओ ऑडियो आदि पहुँचाए जाते हैं। इस नयी व्यवस्था के जरिये स्कूली शिक्षा बंद होने के बजाये और आसान हुई है।

ऑनलाइन शिक्षा अनेक कारणों से लोकप्रिय हुई है। इसका संचालन और प्रदत्त सुविधाएँ आसान और सुलभ भी है। यही कारण है कि ऑनलाइन कक्षा चल रही है और बच्चे उसमें भाग ले रहे हैं। स्कूल, कॉलेजों में इसके जरिये नाना प्रकार की प्रतियोगिताओं और संगोष्ठियों आदि का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें बच्चे व शिक्षक हिस्सा ले रहे हैं। इन कक्षाओं से जुड़ने के लिए अच्छे इन्टरनेट की आवश्यकता है। इसमें विडिओ, ऑडियो और वेब कंटेंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बच्चों को प्रशिक्षित किया जाता है।

यह कहना मुश्किल है कि कोरोना काल कब समाप्त होगा और हम सबको सामाजिक दूरी का पालन करना भी अति आवश्यक है। इस कारण ऑनलाइन शिक्षा ही आज बेहतर विकल्प माना जा रहा है। वर्तमान समय में लोगों के पास समय की कमी है इसलिए वेब के माध्यम से दी जाने वाली सभी सेवाएँ लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के कई लोकप्रिय एप हैं, जैसे गूगल क्लासरूम, स्काइप, जूम, गूगल मीट, बाईजूस, मेरिटनेशन जिसमें सी. बी.एस ई के पाठ्यक्रम की सभी कक्षाओं की विषय सामग्री मौजूद है जिसके जरिये बच्चे वीडियो देखकर मुश्किल पाठ को आसानी से समझ सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की कठिनाइयों पर प्रश्न विचार किया जाए तो ऑनलाइन शिक्षा में जहाँ अधिकतर विद्यार्थी सुविधा उठा रहे हैं वहाँ आज भी सुदूर प्रान्तों में इन्टरनेट की स्पीड उतनी नहीं है जिससे ऑनलाइन क्लास अटेंड की जा सके, दूसरी समस्या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को लेकर है। माध्यम और निम्न परिवारों के बच्चों के पास स्मार्ट फोन नहीं है या उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है कि वो इसका खर्चा वहन कर सकें।

एक और बड़ी समस्या है, शिक्षकों का इन्टरनेट पर पढ़ाना। यह एक नया माध्यम है, और परम्परागत अध्यापक इस तरह की तकनीकों के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत करने में हिचकिचाते हैं। शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षा लेने से पहले ट्रेनिंग दी जानी चाहिए ताकि वह इसका अच्छा इस्तेमाल कर सकें और अपना ज्ञान विद्यार्थी तक पहुँचा सकें। यदि हम ऑनलाइन शिक्षा की संभावनाओं को देखें तो इन्टरनेट के इस युग में इस पद्धति का महत्व तेजी से बढ़ रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान पर विचार किया जाए तो लाभ, यदि हम सब पहलुओं पर गौर करते हुए डिजिटल शिक्षा की बात करें तो हमें इसके द्वारा होने वाले लाभ, हानि, वरदान या अभिशाप, महत्व आदि बातों पर गहराई से सोचते हुए इस पद्धति से होने वाले फायदों को समझना होगा।

शिक्षक के साथ अधिक नियमित सम्पर्क विद्यार्थी विभिन्न ऐप्स के माध्यम से अपने शिक्षक से सम्पर्क साधता है, जैसे जूम, स्काइप, गूगल क्लासरूम आदि छात्र अधिकतर फोन के माध्यम से अपने शिक्षक से सम्पर्क साध कर लाभ उठाते हैं। वह जब चाहे अपने संदेह दूर कर सकते हैं। ऑडियो, वीडियो, रिकॉर्डेड लेक्चर पीपीटी आदि के जरिये ऑनलाइन शिक्षा रोचक हो गई है।

बेहतर फेलिक्सिबिल्टी ऑनलाइन ट्यूशन के साथ अतिम मिनो के समय मे परिवर्तन आ सकता है। शिक्षक जब चाहे तब क्लास रख सकते है और स्थगित भी कर सकता है। इसमे यात्रा नही करनी पडती है और काफी समय बच जाता है। ऑनलाइन स्क्रीन शेयरिंग का उपयोग करके विषयो को समझना आसान हो गया है। ऑनलाइन शिक्ष एक उत्कृष्ट शिक्षा का उदहारण है।

नई तकनीक से शिक्षण व्यवस्था मे बदलाव ऑनलाइन ट्यूशन सबसे अधिक शिक्षण सम्बंधित विकल्प देता है। ऑनलाइन व्हाईटबोर्ड का उपयोग, फाइल, लिंक, और विडियो भेजने के कारण शिक्षक अपनी रचनात्मक शिक्षा को विद्यार्थी तक पहुचा सकता है। इसमे शिक्षक को विभन्न प्रकार से बच्चो को पढाने का मौका मिलता है। डिजिटल डेटा को आसानी से सेव किया जा सकता है और बाद मे पुनः उपयोग किया जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान अभी तक हमने इस शिक्षा प्रणाली का महत्व, चुनौतियां और इससे होने वाले फायदो के बारे मे ही जाना है परन्तु दूसरी ओर इससे होने वाले दुष्परिणाम भी अब सामने आने लगे है। चलिए इस पद्धति से होने वाले नुकसान पर भी गौर करे।

छात्रो मे एकागता की कमी के कारण ऑनलाइन ट्यूशन से कुछ छात्रो मे एकागता की कमी देखी गई है। ऑनलाइन ट्यूशन ऑफलाइन ट्यूशन के मुकाबले कम समय के लिए शिक्षा प्रदान करता है और सिर्फ एक तरफा शिक्षक बच्चो को पढता है,जिसमे बच्चा न तो क्लास बंक ही कर पता है और न ही पूरा ध्यान दे पता है। ऑफलाइन शिक्षा मे अध्यापक नैतिक शिक्षा भी देता है पर ऑनलाइन शिक्षा मे यह सभव नही हो पाता।

अच्छे इन्टरनेट का होना जरुरी ऑनलाइन शिक्षा के लिए अच्छे इन्टरनेट की आवश्यकता होती है। इन्टरनेट की व्यवस्था न होने से समस्या उत्पन्न होती है। खासकर कई स्थान पर लोगो के पास तीव्र गति वाले इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध नही होने से ऑनलाइन शिक्षा पर इसका बुरा प्रभाव देखने को मिलता है।

छात्रो का मूल्यांकन न कर पाना पर विचार किया जाए तो सामन्यत एक शिक्षक अपने विद्यार्थियो को कक्षा मे सीधे तरीके से समझ सकता है। कक्षा मे शिक्षक विद्यार्थी की बॉडी लेन्वेज, बोलचाल और उसकी प्रतिक्रिया के माध्यम से समझ सकता है की उसे विषय कितना समझ आया है और उसके आधार पर वह समझा सकता है। दूसरी ओर प्रत्यक्ष रूप से आमने सामने ऑनलाइन शिक्षा मे बात करने का अवसर नही मिलता, जिससे छात्रो को समझने मे कठिनाई होती है।

व्यावहारिक शिक्षा का अभाव ऑनलाइन शिक्षा मे अधिकतर व्यवहारिक शिक्षा का आभाव पाया जाता है परन्तु शिक्षा की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। स्कूल मे शिक्षक भौतिक वस्तुओ का उपयोग करके छात्रो को पढ़ाते है। यह व्यावहारिक सपर्श, गहरी समझ अध्ययन मे विशेष रूचि उत्पन करता है। ऑनलाइन शिक्षा मे एनिमेटेड वीडियो का उपयोग करके छात्रो को पढ़ाया जाता है, जिसमे व्यावहारिक ज्ञान अनुपस्थित होता है।

आत्म मूल्यांकन की कमी स्कूलो मे बच्चो की योग्यता को जानने के लिए परीक्षाएँ और होमवर्क आदि दिया जाता है। जिससे शिक्षक जान सकते है कि बच्चा कहाँ पिछड़ गया है और उसे विषय कितना समझ आया है। इससे विद्यार्थी स्वय भी अपना मूल्यांकन कर सकते है। ऑनलाइन शिक्षा मे बच्चे ई पुस्तक पढ़ते है जबकि ऑफलाइन मे वे विभन्न प्रकार की पुस्तको को हाथ मे लेकर पढ़ते है इसलिए ऑनलाइन शिक्षा मे आत्म मूल्यांकन की कमी नजर आती है।

पाठ्यक्रम मे सुधार विस्तृत पाठ्यक्रम भी एक बड़ी समस्या है। ऑनलाइन शिक्षा मे ऑनलाइन कक्षा का समय कम होता है जिसमे विषय को पूरा नही किया जा सकता। खासकर साहित्यिक भाषाओ को पढाने के लिए जिसमे शिक्षक उपन्यास पढाते हैं और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से उपन्यास पढाना अपने आप मे एक चुनौती है। इसके लिए पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए विस्तृत उपन्यास न रखकर छोटे पाठ रखे।

अनुशासन मे कमी स्कूल मे विद्यार्थी अनुशासन का पालन करता है। समय से अपना कक्षा कार्य और गृह कार्य पूरा करता है परन्तु ऑनलाइन शिक्षा मे इसका निश्चित पालन नही होता वह स्वतत्र रूप से कार्य करने लगता है अर्थात अपने मन के मुताबिक कार्य करता है। इन्टरनेट पर आज सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध है इसके चलते माँ -बाप बच्चे को स्मार्ट फोन देने मे हिचकिचाते है की बच्चा गलत दिशा मे भी जा सकता है।

सुधारने के उपाय जब भी कोई नई पद्धति आती है तो उसके साथ उसके अच्छे और बुरे परिणाम भी आते है। उसके प्रयोग के बाद ही हम उसके नकारात्मक पहलुओ को पहचान सकते है। ऑनलाइन शिक्षा पर देश और बच्चो का भविष्य टिका हुआ है इसलिए हमे इस पद्धति के सभी पहलुओ का अध्ययन कर इसमे सुधार के उपायो की ओर ध्यान देना चाहिए। बच्चो को पूरे तरीके से ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भर नही रहना चाहिए। उन्हे मुद्रित पुस्तको को भी पढना चाहिए। शिक्षको को ऑनलाइन शिक्षा के बेहतर ट्रेनिंग दी जानी चाहिए ताकि वह इस नई पद्धति को अपना सके और बच्चो को उत्तम ज्ञान दे सके। बच्चो को प्रायोगिक अध्ययन के अवसर भी उपलब्ध करने चाहिए। बच्चो की समस्याओ के समाधान के लिए हेल्प केंद्र खोले जाने चाहिए जहाँ छात्र बेहिचक अपनी समस्याओ का समाधान पा सके।

निष्कर्ष के रूप मे अत मे निष्कर्ष के रूप मे यह कह सकते है कि यदि प्रबधित रूप से बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा द्वारा सीखने के अवसर प्रदान किये जाएँ तो वह रुचि के साथ सीख सकते है। हम टेक्स्ट बुक्स के पाठ्यक्रम के साथ इस नवीन पद्धति को नहीं अपना सकते इसके लिए पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए या राष्ट्रीय स्तर पर बच्चो के लिए हलके फुल्के क्रैश कोर्स बनाये जाएँ जो अल्प समय मे सीखे जा सकते है। कोचिंग सस्थान भी यदि दस बारह घटो की भरी भरकम क्लास लेने के बजाये और बच्चो के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए कम समय मे आकर्षक फीवर के साथ अध्यापन की व्यवस्था करे तो इस तकनीक पर आधारित शिक्षण से हम लाभ उठा सकते है।

डॉ . रेवा प्रसाद
सहायक प्रोफेसर
सेंट फ्रांसिस डी. सेल्स डिग्री कॉलेज,
हुस्कुर गेट , इलेक्ट्रॉनिक सिटी, बैंगलूरु -560100
दूरभाष-9844801644
ईमेल -revaprasad2@gmail.com